उर्दू शायरी और इश्क

उर्दू शायरी और इश्क

उर्दू के वर्तमान १०८ बड़े शायरों का
रंगीन कलाम

ग़ज़लें

Laxmi - Narayan Patel
Govindram - Seksheria
Institute of
Tech. &
Science.

सम्पादक
फ़ारुक अर्गली

प्रकाशक :
न्यू स्टैण्डर्ड पब्लिकेशन्स
५२६०, कोल्हापुर हाउस, सब्जी मण्डी; दिल्ली-११०००७

प्रकाशक | न्यू स्टैण्डर्ड पब्लिकेशन्ज
५२६०, कोल्हापुर हाउस (प्राइमरी स्कूल के सामने)
दिल्ली-११०००७

सम्पादक | फारुक अर्गली

संस्करण | प्रथम १९७५

आवरण | रहमान आर्टिस्ट,
गरीबुल्ला भवन, पटपड़ गंज रोड, दिल्ली-११००५१

मुद्रक | अशोक प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली-११०००६

मूल्य | ४ रुपये

Laxmi Narayan Patel

कथनीय

उर्दू शायरी के अनेकों संकलन छपते ही रहते हैं, लेकिन यह संग्रह इस दावे के साथ पेश किया जा रहा है कि अभी तक जबकि अनेकों छोटे-बड़े प्रकाशकों तथा संग्रहकर्त्ताओं ने काम किया है इतना परिश्रम करने का किसी ने प्रयत्न नहीं किया। इस संग्रह की यह विशेषता है कि इसमें वर्तमान समय के और जीवित शायरों का कलाम सम्मिलित है जो आज उप महाद्वीप भारत-पाक में प्रसिद्धि और लोकप्रियता के क्षितिज पर विद्यमान है।

फ़ारूक़ अर्गली

२४/२५, गणेश पार्क, ४ जून, १९७५

रशीद मार्केट, दिल्ली-५१

रघुपति सहाय 'फिराक' गोरखपुरी

जब नज़र आपकी हो गई है।
ज़िन्दगी, ज़िन्दगी हो गई है॥

बारहा बरख़िलाफे[1] हर उम्मीद।
दोस्ती दुश्मनी हो गई है॥

है वो[2] तकमील पुरकारियों[3] की।
जो तेरी सादगी हो गई है॥

तेरी हर पुरसिशो[4] मेहरबानी।
अब मेरी बेकसी हो गई है॥

भूल बैठा है तू कहके जो बात।
वो मेरी ज़िन्दगी हो गई है॥

बज़्म[5] में आँख उठाने की तकसीर।
ऐ 'फिराक' आज भी हो गई है॥

---

१. विपरीत २. सम्पूर्णतया ३. सजावटें ४. पूछना ५. उत्सव

सम्मिल सईदी

गुज़र के इश्क की हद से भी कुछ मयालम है।
कि जैसे इश्क़ अभी उनके हुस्न से कम है।।

अदू का घर है तेरी राह में तो क्या ग़म है।
सुना है ख़ुलद[१] के रस्ते में भी जहन्नम[२] है।।

गलत है ये कि मिज़ाजे ज़माना बरहम[३] है।
ज़माना क्या है तुम्हारी नज़र का आलम है।।

ये वक्त कल न रहेगा रहेंगे याद ये दिन।
सितम की उम्र ज़ियादा है ज़िन्दगी कम है।।

इबदतों के लिए फुरसतें हैं लोगों को।
हमें गुनाह भी करने को ज़िन्दगी कम है।।

१. स्वर्ग २. नरक ३, अस्तव्यस्त, खराब

फैज अहमद 'फैज'

दोनों जहान तेरी मोहब्बत में हार के ।
वो जा रहा है कोई शबे-ग़म गुज़ार के ।।

वीरां है मैकदा ख़ुमो-सागर[1] उदास है ।
तुम क्या गए कि रूठ गए दिन बहार के ।।
इक फ़ुर्सते-गुनाह[2] मिली, वो भी चार दिन ।
देखे हैं हमने हौसले परवरदिगार के[3] ।।

दुनिया ने तेरी याद से बेगाना कर दिया ।
तुझ से भी दिलफ़रेब[4] हैं ग़म रोज़गार के[5] ।।

भूले से मुस्करा तो दिए थे वो आज 'फ़ैज' ।
मत पूछ वलवले दिले-नाकर्दाकार[6] के ।।

१. शराब का प्याला और घड़ा २. गुनाह करने का समय ३. ईश्वर के ४. चित्ताकर्षक ५. साँसारिक दुःख ६. अनुभवहीन हृदय

अहमद 'फ़राज़'

ये आलम शौक का देखा न जाये।
वो बुत हैं या ख़ुदा, देखा न जाये॥
ये किन नज़रों से तूने आज देखा।
कि तेरा देखना देखा न जाये॥

हमेशा के लिए मुझ से बिछुड़ना।
ये मंज़र[1] बारहा देखा न जाये॥

ये मेहरूमी नहीं, पासे वफ़ा है।
कोई तेरे सिवा देखा न जाये॥

यही तो आशना[2] बनते हैं आख़िर।
कोई नाआशना[3], देखा न जाये॥

'फराज़' अपने सिवा है कौन तेरा।
तुझे मुझसे जुदा देखा न जाये॥

---

१. दृश्य २. पहचान वाला ३. न जानने वाला

कुमार 'पाशी'

कैसा था वो खुशी भी हवाई न दे सका।
मुझको जो एक दिन की खुदाई न दे सका॥

इक मैं ही था कि जिसपे था वो मेहरवाँ बहुत।
एक मैं ही था कि जिसे वो रिहाई न दे सका॥

उसका ये करम कि सितम कुछ न पूछिये।
इक पल जो मुझको दर्दे जुदाई न दे सका॥

आँखें खुली हुई थीं चमक बिजलियों की थी।
वो रूबरू[1] का फिर भी दिखाई न दे सका॥

सब मुनकशिफ़[2] थीं उसपे मेरी बेगुनाहियाँ।
फिर भी वो मेरे हक़ में सफाई न दे सका॥

'पाशी' वो कोई और कहाँ था वो मैं तो था।
जिसको मैं उम्र भर की कमाई न दे सका॥

१. सम्मुख २. प्रकट

हसन 'नईम'

दुशमनी भी है ग़मों से उनसे याराना भी है।
दर्सगाहे[1] दिल भी है, महफ़िल जुनूं[2] खाना भी है॥

बन गया तर्ज़ेबयाँ[3] से उनका ज़ाती वाक़िया[4]।
वरना इस क़िस्से में शामिल मेरा अफ़साना भी है।

सब उठाये फिर रहे हैं आफ़ताबे[5] आरज़ू॥
उन ही दीवानों की सफ़ में तेरा दीवाना भी है॥

खिलवतो[6] जल्वत[7] में उनसे बाग़ियाना[8] ग़ुफ़्तगू।
बारगाहे[9] हुस्न में शायर का नज़राना[10] भी है॥

रुत बदलता है ज़माना उनकी नज़रों से 'नईम'।
दिल उमींदों का चमन भी कुंज वीराना भी है॥

---

१. पाठशाला २. पागलपन ३. बातों का ढंग ४. निजी घटना ५. सूर्य आकांक्षाओं का ६. एकान्त ७. सबके सामने ८. विद्रोह पूर्ण ९. दरबार में १०. टभें।

मजहर 'इमाम'

यहाँ पै बैठ के हम किसका इन्तिज़ार करें।
उसी गली में चलें रक़्से नौबहार करें।।

जो अपने दोस्त बने उनका हाल देख चुके।
अब और किसको ग़मे दिल का राज़दार करें।।

किसी तरह तो कटे ये गिराँ[1] पहाड़-सो रात।
चलो कि आज की शब ज़िक्रे हुस्तेयार करें।।

किसी की बज़्म में गुज़रे हुए हसीं लम्हो[2]।
क़रीब आओ कि जी भर के तुम्हें प्यार करें।।

यही है रस्मे मुहब्बत तो अगर हम भी 'इमाम'।
जलायें शम्मे वफ़ा, दाग़े दिल शुमार[3] करें।।

---

१. भारी २. क्षण ३. गिनती

आयशा 'मसरूर'

कैसे सुनाऊँ तेरी मुहब्बत की दास्तां ।
डर है कि हो न जाये ज़माना भी बदगुमां ।।
खोया सुकूं[१], मिली ये सुलगती उदासियाँ ।
कैसी पड़ी हैं मुझपे ये उफ़लादे[२] नागहाँ[३] ।।

झूठे थे तेरे वायदे वफ़ायें तेरी फरेब ।
धोखे में ज़िन्दगी को किया हमने रायगां[४] ।।

रुसबा[५] हो तेरा प्यार ये कब चाहते थे हम ।
दानिस्ता[६] हमने कब किया इस राज को अयां ।।

'मसरूर' दिल को राख हुए मुद्दतें हुईं ।
उठता है सर्द राख से अब तक मगर धुआं ।।

१. शांति २. विपत्ति ३. अचानक ४. व्यर्थ में, बेकार की ५. बद-नाम ६. जानकर

'उरूज' जैदी

बस इस खता पे कि रब्ते[१] हज़ूर है मुझसे।
मेरे क़रीब की दुनिया भी दूर है मुझसे॥

तेरे लरजते[२] हुए लब हैं इसका आईना[३]।
वो एक बात जो कहनी ज़रूर है मुझसे॥

मुझे यक़ीन[४] कि है चशमे[५] मस्त का सदका।
शराब को है ये दावा सुरूर है मुझसे॥

क़दम-क़दम पे तेरे नक्शे पा को चूमा है।
खुशा[६]! जुनूं[७] कि ये कारे शऊर[८] है मुझसे॥

छिड़कता रहता हूं खूने उमीद के क़तरे।
ग़मे हयात[९] के चेहरे पे नूर[१०] है मुझसे॥

१. सम्बन्ध है २. काँपते ३. दर्पण ४. विश्वास ५. मस्त आँख ६. अहा! वाह! ७. बदहवासी ८. काम बुद्धिमानी का ९. जीवन १०. ज्योति।

मुइन अहसन 'जज्बी'

मरने की दुआएं क्यों माँगूं, जीने की तमन्ना कौन करे।
ये दुनिया हो या वो दुनिया, अब ख़्वाहिशे-दुनिया[1] कौन करे॥

जब कश्ती साबितो-सालिम थी, साहिल[2] की तमन्ना किसको थी।
अब ऐसी शिकस्ता[3] कश्ती पर साहिल की तमन्ना कौन करे॥

जो आग लगाई थी तुमने, उसको तो बुझाया अश्कों ने[4]।
जो अश्कों ने भड़काई है, उस आग को ठण्डा कौन करे॥

दुनिया ने हमें छोड़ा 'ज़ज़्बी', हम छोड़ न दें क्यों दुनिया को।
दुनिया को समझ कर बैठे हैं, अब दुनिया-दुनिया कौन करे॥

क्या तुझको पता क्या तुझको खबर दिन-रात ख़यालों में अपने
ऐ काकुले-गेती[5] हम तुझको जिस तरह संवारा करते हैं॥

ऐ मौजे-बला[6] उनको भी ज़रा दो-चार थपेड़े हल्के से।
कुछ लोग अभी तक साहिल से तूफां[7] का नज़ारा करते हैं॥

१. दुनिया की इच्छा २. तट ३. टूटी-फूटी ४. आँसुओं ने ५. संसार रूपी केश की लटें ६. भयंकर लहर ७. तूफान

सय्यद आबिद अली 'आबिद'

(पाकिस्तान)

चाँद-सितारों से क्या पूछूं कब दिन मेरे फिरते हैं ।
वो तो बिचारे ख़ुद हैं भिकारी डेरे-डेरे फिरते हैं ।।

जिन गलियों में हमने सुख की सेज पे रातें काटी थीं ।
उन गलियों में व्याकुल होकर सांझ-सवेरे फिरते हैं ।।

रूप-सरूप की जोत जगाना इस नगरी में जोखिम है ।
चारों खूंट बगूले बनकर घोर अंधेरे फिरते हैं ।।

जिनके शाम-बदन साए में मेरा मन सुस्ताया था ।
अब तक आँखों के आगे वो बाल-घनेरे फिरते हैं ।।

कोई हमें भी ये समझा दो, उनपर दिल क्यों रीझ गया ।
तीखी चितवन, बांकी छब वाले बहुतेरे फिरते हैं ।।

इस नगरी के बाग़ और बन की यारो लीला न्यारी है ।
पंछी अपने सर पे उठाकर, अपने बसेरे फिरते हैं ।।

लोग तो दामन सी लेते हैं, जैसे हो जी लेते हैं ।
'आबिद' हम दीवाने हैं, जो बाल बिखेरे फिरते हैं ।।

'हफ़ीज' जालंधरी (पाकि०)

हम में ही थी न कोई बात, याद न तुमको आ सके।
तुमने हमें भुला दिया, हम न तुम्हें भुला सके॥

तुम हो न सुन सको अगर, क़िस्सा-ए-ग़म सुनेगा कौन।
किसकी ज़बां खुलेगी, फिर, हम न अगर सुना सके॥

होश में आ चुके थे हम, जोश में आ चुके थे हम।
बज़्म[1] का रंग देखकर सर न मगर उठा सके॥

रौनक़े-बज़्म बन गए, लब पे हिकायतें[2] रहीं।
दिल में शिकायतें रहीं, लब न मगर हिला सके॥

शौक़े-विसाल[3] है यहाँ, लब पे सवाल है यहाँ।
किसकी मजाल है यहाँ, हमसे नज़र मिला सके॥

ऐसा भी कोई नामाबर[4]! बात पे कान धर सके।
सुन के यक़ीन कर सके जा के उन्हें सुना सके॥

इज्ज़[5] से और बढ़ गई बरहमी-ए-मिज़ाजे-दोस्त[6]।
अब वो करे इलाजे-दोस्त जिसकी समझ में आ सके॥

अहले-ज़बाँ तो हैं बहुत, कोई नहीं है अहले-दिल।
कौन तेरी तरह 'हफ़ीज़' दर्द के गीत गा सके॥

---

१. महफिल २. कहानियाँ ३. माशूक से मिलने का शौक़ ४. पत्र-वाहक ५. विनय ६. मित्र या माशूक के स्वभाव की नाराजी ७. भाषा के विशेषज्ञ।

सूफी गुलाम मुस्तफा 'तनस्सुम' (पाकि०)

हज़ार गर्दिशे - शामो - सहर[१] से गुज़रे हैं।
वो क़ाफ़िले जो तिरी रहगुज़र से गुज़रे हैं।।

अभी हवस को मयस्सर[२] नहीं दिलों का गुदाज़[३]।
अभी ये लोग मुक़ामे - नज़र[४] से गुज़रे हैं।।

हर एक नक़्श[५] पे था तेरे नक़्शे-पा[६] का गुमां[७]।
क़दम-क़दम पे तेरी रहगुज़र से गुज़रे हैं।।

न जाने कौन-सी मंज़िल पे जा के रुक जाएं।
नज़र के क़ाफ़िले दीवारो-दर[८] से गुज़रे हैं।।

कुछ और फैल गई दर्द की कठिन राहें।
ग़मे-फ़िराक़[९] के मारे जिधर से गुज़रे हैं।।

जहाँ सरूर[१०] मयस्सर था जामो-मय[११] के बग़ैर।
वो मयकदे[१२] भी हमारी नज़र से गुज़रे हैं।।

---

१. सुबह-शाम का चक्र (काल-चक्र) २. प्राप्त ३. कोमलता ४. दृष्टि स्तर ५. चिन्ह ६. पदचिन्ह ७. भ्रम ८. दीवार तथा दरवाजा ९. विछोह से पीड़ित १०. नशा, आनन्द ११. मदिरा तथा मदिरा-पात्र १२. मधुशालाएं।

इब्ने इनशा (पाकिस्तान)

और तो कोई बस न चलेगा हिज्र के[1] दर्द के मारों का।
सुबह का होना दूभर कर दें, रस्ता रोक सितारों का॥

झूठे सिक्कों में भी उठा देते हैं अकसर सच्चा माल।
शक्लें देख के सौदा करना काम है इन बंजारों का।

अपनी ज़बां से कुछ न कहेंगे चुप ही रहेंगे आशिक़ लोग।
तुमसे तो इतना हो सकता है, पूछो हाल विचारों का॥

जिस जिप्सी का ज़िक्र है तुमसे, दिल को उसी की खीज रही।
यूँ तो हमारे शहर में अकसर मेला लगा है निगारों का[2]॥
एक ज़रा-सी बात थी जिसकी चर्चा पहुँचा गली-गली।
हम गुमनामों ने फिर भी अहसान न माना यारों का॥

दर्द का कहना चीख़ उठो, दिल का तक़ाज़ा वज़अ[3] निभाओ।
सब कुछ सहना, चुप-चुप रहना काम है इज़्ज़तदारों का॥
'इन्शा' अब इन्हीं अजनबियों में चैन से बाक़ी उम्र कटे।
जिनकी ख़ातिर बस्ती छोड़ी नाम न ले उन प्यारों का॥

१. जुदाई के २. सुन्दरियों का ३. यहाँ यह शब्द स्वाभिमान के अर्थों में लिया गया है।

अली सरदार जाफ़िरी

वक़्त है फ़रमाने[१] इश्क़ो आशिकी जारी करें।
हुस्न वालों से कहो सामाने दिलदारी करें॥

मौजेमय[२] आँखों में लहराये बदन में मौजे नूर[३]।
आरिज़ों से चाँद और सूरज से ज़ूनारि[४] करें॥

ताजदारा ने[५] जहाँ के सामने सर ख़म[६] तहाँ।
नाज़नी[७] हाये जहाँ की ताज़बरदारी करें॥

जल रही है सारी दुनिया नफ़रतों की आग से।
इश्क़ वाले आयें अब दुनिया की सरदारी करें॥

फ़ख्र[८] से पहले गले में तमगए[९] आवाती।
और यूँ इन्सानियत का जश्ने[१०] बेदारी करें॥

१. घोषणा, आदेश २. शराव की मौज ३. रोशनी की मौज ४. प्रकाशमान करें ५. सम्राटों ६. झुकना ७. सुन्दरियाँ ८. गर्व ९. आवारा १०. जागृति का उत्सव।

अफ़सर 'जमशेद'

फूल तो बहुत-से हैं, मेरे ज़हन[1] में लेकिन, आप-सा नहीं मिलता।
आप जब भी मिलती हैं दर्द और ख़ुशबू में फासला नहीं रहता।

मेरे देस की जोगन, अपने प्यार के दीपक क्यों जलाए बैठी है।
अब दिलों के मन्दिर में, बस मशीन रहती है देवता नहीं रहता।

अब यही तरीक़ा है दिल की बात को यारो अपने ख़ून से लिख दूं।
बात एक काग़ज़ है, और कोई काग़ज़ भी बेलिखा नहीं रहता।

कौन याद रखेगा 'मीर' की तरह कोई, और भी तो गुज़रा था।
मेरे अहद[2] में यारो, पत्थरों की राहे हैं नक़्शेपा[3] नहीं रहता।

'मेहदी' प्रतापगढ़ी

छिपाये फिरता है चेहरे को जो नक़ाबों[१] में।
हज़ार बार वो आया है मेरे ख़्वाबों[२] में॥

वो इक नसीम के झोंके की तरह गुज़री थी।
उसे तलाश करो ज़ेहन के गुलाबों में॥

किसी के आरिज़े गुलगूं[३] की बात और ही थी।
वो कैफ़ियत[४] नज़र नहीं आती नज़र गुलाबों में॥

बक़ौले[५] हज़रते नाज़िश खलूसो[६] मेहरो[७] वफ़ा।
अब उनका ज़िक्र मिलेगा फ़क़त[८] किताबों में॥

मेरे सवालों का मक़सद[९] गलत न था 'मेंहदी'।
वो बेनकाब हुआ अपने ही जवाबों में॥

१. आवरण २. सपने ३. फूलों के समान ४. स्थिति ५. के अनुसार
६. चाहत ७. स्नेह ८. केवल ९. उद्देश्य।

'अन्दलीब' शादानी (पाकिस्तान)

न यूँ मुस्करा कर अबस[1] आसरा दो।
मुझे इस फरेबे नज़र से छुड़ा दो॥

तुम्हीं ने मुझे प्यार करना सिखाया।
तुम्हीं अब मुझे भूल जाना सिखा दो॥

मेरी ज़िन्दगी शम्मा की ज़िन्दगी है।
जले तो जले खत्म है गर बुझा दो॥

बहुत आज रोने को जी चाहता है।
किसी मिटने वाले का क़िस्सा सुना दो॥

उमीदों की शम्में तो गुल हो चुकीं सब।
अब आओ चिरागें तमन्ना बुझा दो॥

अगर तुमको कोई फ़रेबे वफ़ा दे।
तो इस जुर्म की तुम उसे क्या सज़ा दो॥

मेरे हाथ से अपना दामन न खेंचो।
मुझे और जिस तरह चाहो मिटा दो॥

१. व्यर्थ में।

'रज़ा' रामपुरी

फिर शाम आई बज़्मे तसव्वुर[1] सजाएं हम।
ऐ इश्क़ है इजाज़ते ग़म मुस्कराएं हम ॥
ये क्या ? हमीं को आपने अपना बना लिया।
अरमान था कि आपको अपना बनाएं हम ॥
था कोई शख़्स जिसने नज़र हम से फेर ली।
जा ऐ ग़मेहयात[2] तुझे क्या बताएं हम ॥

बेकार बैठना भी है रिन्दो बुरी सी बात ॥
आओ कि जश्ने[3] तिशना लबी ही मनाएं हम ॥

ऐ दोस्त तूने हमको बहुत आज़मा लिया।
वो दिन ख़ुदा करे कि तुझे आजमाएं हम ॥

कुछ काम अक़्ल करती नहीं इश्क़ में 'रज़ा'।
अरमान अपने आप ही कब तक मिटाएं हम ॥

---

१. कल्पना लोक २. जीवन का दु:ख ३. तृष्णा का उत्सब।

'अहसान' दानिश

यूं न मिल हमसे ख़फ़ा हो जैसे ।
साथ चल, मौजे[1] सबा हो जैसे ।।

बाज़ औकात गुज़रता है ये वहम[2] ।
वो मुझे ढूंढ़ रहा हो जैसे ।।

खिलती कलियों में महक फूट पड़ी ।
उसके आँगन की हवा हो जैसे ।।

आज यूं उसने उड़ाई है हँसी ।
मुझसे अल्लाह ख़फ़ा हो जैसे ।।

उससे मिलते ही गुमाँ सा गुजरा ।
वो मुझें भूल गया हो जैसे ।।

उड़ रहा है वो गुलाबी आँचल ।
फूल से रंग जुदा हो जैसे ।।

आ रहे हैं वो कई रोज़ से याद ।
खुद बखुद ज़ख्म हरा हो जैसे ।।

---

१. हवा का झोंका २. भ्रम ।

कुवर महेन्दर सिह बेदी 'सहर'

इक ग़म की कहानी है, कहिये भी तो क्या कहिये।
और अपनी ज़ुबानी है, कहिये भी तो क्या कहिये॥

वो वक़्त भी था जब तुम मिलते थे मुहब्बत में।
ये बात पुरानी है, कहिये भी तो क्या कहिये॥

उठता है धुआँ दिल से होते हैं रवाँ आँसू।
इस आग में पानी है, कहिये भी तो क्या कहिये॥

क्या दिल की मुरादें हैं, क्या दिल की तमन्नाएं।
इक राम कहानी है, कहिये भी तो क्या कहिये।

मारा है हमें जिस ने, लूटा है हमें जिस ने।
अपनी ही जवानी है, कहिये भी तो क्या कहिये॥

वादा तो किया उसने मिलने का 'सहर' लेकिन।
कासिद[१] की ज़ुबानी है, कहिये भी तो क्या कहिये॥

१- संदेश वाहक।

'नज़ीर' बनारसी

मुझे तो हश्र[१] के वादे पे टाल रखा है।
अजल[२] का नाम बदलकर विसाल[३] रखा है।।

बड़े जतन से तेरा दर्द पाल रखा है।
समझ के तेरी अमानत संभाल रखा है।।

ये उनके दोश[४] पे बिखरी हैं शाम की ज़ुल्फ़ें।
कि इक मछेरे ने कँधे पे जाल रखा है।।

तुम्हारी पहिले की तस्वीर की तरह हमने।
तुम्हारे खत को भी अब तक संभाल रखा है।।
मसल के फेंके हैं तुमने जहाँ-जहाँ गुँचे।
वहाँ-वहाँ पे दिले पायमाल रखा है।।
खयाल रखना ज़रा आख़िरी सफर का भी।
हमेशा तुमने हमारा ख़याल रखा है।।

'नज़ीर' मर के चुकाना पड़ेगा कर्ज़े हयात।
नहीं गर आज तो कल इन्तक़ाल रखा है।।

१. मृत्यु के पश्चात हिसाब का दिन २. कत्ल ३. मिलन ४. कांधा
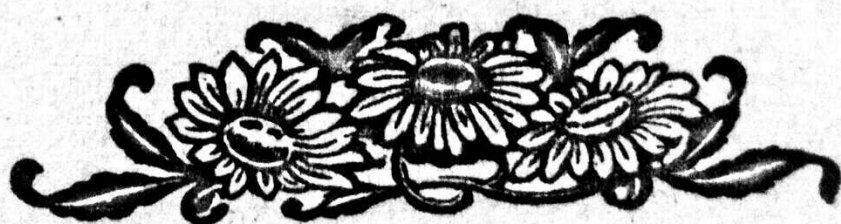
'सैफ' सुहसरामी

वो चेहरा मासूम गुलाबों की तरह है।
आँखों में कोई रंग शराबों को तरह है॥

जुल्फ़ों की घटा रंगे हया नाज़े जवानी।
हर चीज तेरे रुख पे नकाबों की तरह है॥

कल जिनका सितम नाज़ें करम[1] हुस्ने-वज़ा[2] था।
अब उसकी इनायत भी इताबों की तरह है॥

मैं तो ये नहीं कहता कि वो झूठ हैं लेकिन।
वादों की तेरे उम्र हुबाबों की तरह है॥

जो लम्हा है इक ताजा फ़ंसाने का वरक है।
ये उम्रे दो रोज़ा भी किताबों की तरह है॥

फिरते थे जो कल शहरे निगारां से निकलकर।
अब 'सैफ' भी उन खाना खराबों की तरह है॥

१. स्नेह और प्रेम का गर्व २. प्रेम भावना का सौंदर्य।

'वफा सलौनवी

।.

न देख मस्त निगाहों से बार-बार मुझे।
कि मुझ में कुछ तो संभलने की ताब रहने दे॥

जुनूं मुसिर[१] है कि बे परदा उनको देखूंगा।
मगर खिरद[२] को येजिद है हिसाब रहने दे॥

मैं हम कलाम[४] हूँ उससे मुख़िल[५] न हो कोई।
ये ख़्वाब है तो मुझे महवे ख़्वाब रहने दे॥

शे आर अहले जुनूं बस यही हैं दुनिया में।
'वफ़ा' को तू यूं ही ख़ाना ख़राब रहने दे॥

---

१. आगृहीत २. बुद्धि ३. पर्दा, शर्म ४. सम्बोधित ५. हस्तक्षेप करने वाला।

'तजम्मुल' हुसैन

चलूं कैसे दिया दिल का जला के।
बड़े ज़ालिम हैं ये झोंके हवा के॥

भरम खुल जाएगा सब बेरुखी का।
न देखो यूं मुझे नज़रें चुरा के॥

सुलग उठी है सावन की घटा भी।
न जाने क्या इरादे हैं घटा के॥
न माँगो दोस्ती की भीख उनसे।
यहाँ तो लोग दुश्मन हैं ख़ुदा के।

मुझे एक ज़ख़्मे ताजा की तलब है।
चलाओ आज फिर नश्तर[1] ज़फ़ा के॥

चमन में मौसमे[2] गुल बन के गूंजे।
तेरी पाज़ेब[3] के चंचल छना के॥

---

१. छुरी, घाव लगाने का साधन २. बहार ३, पायल।

अब्दुल हमीद अहमद

(पाकिस्तान)

ग़मे मुहब्बत सता रहा है, ग़मे जमाना मसल रहा है।
मगर मेरे दिन गुज़र रहे हैं, मगर मेरा वक़्त रल रहा है॥

वो अब्र[1] आया, वो रंग बरसे, वो क़ैफ़[2] जागा, वो जाम खनके।
चमन में ये कौन आ गया है, तमाम मौसम बदल रहा है॥

मेरी जवानी के गर्म लमहों पै डाल दे गेसुओं का साया।
ये दोपहर कुछ तो मोतदिल[3] हो तमाम माहौल[4] जल रहा है॥
ये भीनी-भीनी सी मस्त खुशबू, ये हलकी-हलकी सी दिलनशीं[5] बू।
यहीं कहीं तेरी ज़ुल्फ के पास कोई परवाना जल रहा है॥
न देख ओ महजबीं मेरी सम्त इतनी मस्ती भरी नज़र से।
मुझे ये महसूस हो रहा है, शराब का दौर चल रहा है॥
'अदम' घराबात[6] की सहर है कि बारगाहे रमूज़े[7] हस्ती।
इधर भी सूरज निकल रहा है, उधर भी सूरज निकल रहा है॥

---

१. बादल २. आनन्द ३. अधिक गर्म न अधिक ठन्डा ४. वातावरण
५. हृदय-स्पर्शी ६. मधुशाला ७. जीव रहस्यों का दरबार।

'शेरे' भोपाली

इनसे हमें कुछ काम नहीं है।
दिल को मगर आराम नहीं है ॥

मेरी तबाही, मेरा मुक़द्दर।
आप पे कुछ इलज़ाम नहीं है ॥

इश्क है ऐसा आलम जिसमें।
सुबह नहीं है शाम नहीं है ॥

हुस्न के जलवे माँगने वालो।
इश्क़ की दौलत आम नहीं है ॥

हमको न अपना कहके पुकारो।
ये तो हमारा नाम नहीं है ॥

इतना भी क्या 'शेरी' से तकल्लुफ़।
ऐसा तो वो बदनाम नहीं है ॥

'क़तील' शिफ़ाई (पाकिस्तान)

अंगड़ाई पर अंगड़ाई लेती है रात जुदाई की।
क्या तुम समझो, क्या तुम जानो, बात मेरी तनहाई की ॥

टूट गए सैटयाल[१] नगीने फूट बहे रुख़सारों[२] पर।
देखो मेरा साथ न देना, बात है ये रुसवाई की ॥

वस्ल[३] की शब ना जाने क्यों इसरार था उनको जाने पर।
बक़्त से पहले डूब गए, तारों ने बड़ी दानाई[४] की ॥

आपके होते दुनिया वाले मेरे दिल पे राज करें।
आपसे मुझको शिकवा है, ख़ुद आपने बेपरवाही की ॥

उड़ते-उड़ते आस का पंछी दूर उफ़क़[५] में डूब गया।
रोते-रोते डूब गई आवाज़ किसी सौदाई[६] की ॥

१. तरल २. कपोलों ३. मिलन ४. बुद्धिमानी ५. क्षितिज ६. दीवाना

गुलाम रब्बानी 'ताबाँ'

कोई हरीफ़े[1] ग़मे रहगुज़र[2] मिले न मिले।
हमारी तरह ख़राबे सफर मिले न मिले॥

जफ़ा का दौर है ग़म को असर मिले न मिले।
जबीं झुके न झुके संगेदर मिले न मिले॥

ग़ुबारे[3] राह चला साथ ये भी क्या कम है।
सफ़र में और कोई हम सफ़र मिले न मिले॥

जला सको तो जलाओ तुम आरज़ू के चिराग़।
सहर की राह न देखो सहर मिले न मिले॥

हवस[4] को जल्व-ए-बारेदिगर[5] का शौक सही।
नज़र को फ़ुरसते बारेदिगर मिले न मिले॥

पयामे[6] दर्द भी 'ताबो' बहुत ग़नीमत है।
न जाने दिल की कभी ख़बर मिले न मिले॥

१. प्रतिद्वन्द्वी २. मार्ग का दुःख ३. राह की धूलि ४. वासना ५. पुनः ६. सन्देश।

मजरूह 'सुलतान पुरी'

हम हैं मताये[1] कूचाओ बाज़ार की तरह।
उठती है हर निगाह खरीदार की तरह॥

उस रोज़ हम हुए हैं ग़नी[2] जब वो सीमतन[3]।
हाथ आ गया है दौलते बेदार[4] की तरह॥

वो तो कहीं है और मगर दिल के आस-पास।
फिरती है कोई शय निगाहे यार[5] की तरह॥

सीधी है राहे शौक पै, यूंही कहीं-कहीं।
ख़म हो गई है गेसुए दिलदार की तरह॥

'मजरूह' लिख रहे हैं वो अहले वफा का नाम।
हम भी खड़े हुए हैं गुनहगार की तरह॥

१. पूंजी २. सम्परत ३. चाँदी के बदन वाली ४. जीवित सम्पत्ति
५. यार की दृष्टि।

'अमीर' आग़ा कज़लबाश

नूरे सहर[१] को ज़ुलमते[२] शब[३] से बचाइये।
अपने रुख़े[४] जमील से ज़ुलफ़ें हटाइये॥

तारीकिये[५] हयात से घुटने लगा है दम।
वीरान घर में शम्मे तमन्ना जलाइये॥

मेरी तबाहियों से नहीं है तुम्हारा हाथ।
मुझको तो ऐतबार है कसमें न खाइये॥

फिर हो चला है अपनी वफाओं पै मुझको नाज़।
फिर आप मुझको अपनी नज़र से गिराइये॥

आ जाए कोई हर्फ़ न तक़्वे[६] पे आपके।
ये मयकदा है, शेख़े हरम लौट जाईये॥

अब कारवाँ को खतरा-ए-रहजन[७] नहीं 'अमीर'।
अब कारवाँ को राहबरों से बचाइये॥

---

१. प्रभात २. अंधकार ३. रात्रि ४. सुन्दर चेहरा ५. जीवन का अंधकार ६. पवित्रता ७. लुटेरा।

'बशर' नवाज़

रोज़ कहाँ से कोई नयापन अपने आप में लाएंगे।
तुम भी तंग आजाओगे एक दिन हम भी तंग आ जाएंगे।।

चढ़ता दरिया इक न इक दिन खुद ही किनारे काटेगा।
अपने हँसते चेहरे कितने तूफानों को छिपाएंगे।।

वो भी कोई हम सा ही मासूम गुनाह का पुतला था।
नाहक उस से लड़ बैठे थे अब मिल जाए मनाएंगे।।

समीं[1] की रुत काट के आने वाले परिन्दा[2] ये तो कहो।
दूर देश को जाने वाले कब तक लौट के आएंगे।।

इस जानिब हम, उस जानिब तुम, बीच में हाइल एक अलाव।
कब तक हम तुम अपने-अपने ख़्वाबों को झुलाएंगे।।

रूठ के तुझ से बस्ती-बस्ती ढूँढ़ रहा हूं तुझ जैसा।
सोच रहा हूँ इसी बहाने कुछ दिन तो कट जाएंगे।।

---

१. सर्दी का मौसम २. पक्षी ३. बाधक।

'साहिर' लुधियावनी

मैं ज़िन्दा हूं ये मुशतहिर[1] कीजिए।
मेरे क़ातिलों को ख़बर कीजिए।।

ज़मीं सख़्त है आसमाँ दूर है।
बसर हो सके तो बसर कीजिए।।

सितम के बहुत से हैं रद्दे अमल[2]।
जरूरी नहीं आँख तर कीजिए।।

वही ज़ुल्म बारेदिगर[3] है तो फिर।
वही जुर्म बारेदिगर कीजिए।।

क़फ़स तोड़ना बाद की बात है।
अभी ख़्वाहिशें बालों पर कीजिए।।

१. घोषित, प्रसारित २. प्रतिक्रिया ३. पुनः एक बार।

ऐजाज़ सिद्दीकी

पयामे रज़्म[१] है खंजर[२] बकफ़ हसीनों को।
नज़र लगे न कहीं मेरे नाज़नीनों को।।

क़दम-क़दम पे सजाए गए हैं मक्तले[३] शौक़।
लहू पुकार रहा है फिर आस्तीनों को।।

ये तेज़ धार हैं नफ़रत के ख़िरमनों[४] के लिए।
गले लगाओ मुहब्बत के बोशा[५] चीनों को।।

शुमार रोज़ो शबे बेकसी कभी न हुआ।
कभी दिनों को गिना है कभी महीनों को।।

शिकस्त[६] रीख्त से इनको बचा लिया 'ऐजाज़'।
लगी थी ठस बहुत दिल के आबगीनों[७] को।।

१. सन्देश युद्ध का २. कटार थामे ३. प्रेम की वेदी ४. घोंसला
५. फूल तोड़ने वाले ६. टूट-फूट, काँट-छाँट ७. शीशे सी नाजुक वस्तु

पं० बालमुकन्द 'अर्श' मलसियानी

रुका है जो आंसू रवां हो न जाए।
मेरा राज़े पिन्हाँ[1] अयाँ[2] हो न जाए।।

सितम में बड़ा लुत्फ़ आने लगा है।
वो ना मेहरबा, मेहरबाँ हो न जाए।।

ज़माने में होती रहे जंग बेशक।
मेरे आपके दरमियाँ हो न जाए।।

मेरे सोजे उल्फ़त की हो खैर यारब।
ये शोला भी बुझकर धुआँ हो न जाए।।

सरे बज़्म ऐ अर्श ख़ामोश रहना।
मेरे दर्द का तर्जुमा[3] हो न जाए।।

१. गुप्त २. खुल जाना ३. प्रतिनिधित्व, खोल देने वाला।

रऊफ़ 'ख़ैर'

इस अदा पर तो मिटा जाता है तालिब[१] कोई।
सुनने वाला है कोई और मुख़ातिब[२] कोई॥

आज तक भी है जो तस्कीने[३] अना से क़ासिर[४]।
ज़िन्दगी है कि भटकता हुआ राहिब[५] कोई॥

मरने वालों तो बुहतान[६] तराशो लेकिन।
जीने वालों को दो इलज़ाम मुनासिब कोई॥

ज़िन्दगी तूने पलट कर नहीं देखा वरना।
दूर तक देख रहा था तेरी जानिब कोई॥

ग़म जुदा, फ़िक्र जुदा, ज़ीस्त[७] की अक़दार[८] जुदा।
'ख़ैर' शायर है मगर 'मीर' न 'ग़ालिब' कोई॥

१. तलबगार २. सम्बोधित ३. अहंकार की तृप्ति ४. वंचित, असफल ५. वानप्रस्थी ६. लांछन ७. जीवन ८. मूल्य।

शाहजहाँ बानो 'याद' देहलवी

जब किसी सकीने[1] से मौज कोई टकराई।
जिन्दगी के माथे की हर शिकन उभर आई।।

है मेरी निगाहों में ज़र्रा-ज़र्रा आईना।
आप ही तमाशा हूं, आप ही तमाशाई।।

मौत को हसीं कह कर आज हम ने ये जाना।
इस तरह भी होती है ज़िन्दगी की रुस्वाई।।

बर्क़ आके लहराई जब कभी नशेमन पर।
मेरा दिल लरज़ उठा, मेरी आंख भर आई।।

जाने कितनी उम्मीदें याद रक्खा करती हैं।
फिर भी कम नहीं होती अपने दिल की तनहाई।।

---

१. बेड़ा, नौका।

ज़ोहरा 'निगाह' (पाकिस्तान)

लब पर खामोशियों को सजाए नज़र चुराए।
जो अहले दिल हैं बैठे हैं चुपचाप सिर झुकाए॥

कह दो कोई सबा से इधर आजकल न आये।
कलियाँ कहीं महक न उठें फूल खिल न जाए॥

अब दोस्ती वो फ़न कि जो सीखे वही निभाये।
और है वफ़ा तमाशा जिसे आये वो दिखाए॥

कुछ कहना जुर्म है तो ख़तावार मैं भी हूं।
ये और बात मेरा कहा वो समझ न पाए॥

Leexmi. Narayan Patel

'शाद' फ़िदाई

दर्द उल्फ़त का जिसे आप अता करते हैं।
तय वही जादये[१] तस्लीमो रज़ा करते हैं।

और होंगे जो तबाही का गिला करते हैं।
आइये आप से हम अहदे[२] वफ़ा करते हैं॥

आह से और भड़क जाते हैं ग़म के शोले।
ये वो दिये हैं जो तूफाँ में जला करते हैं॥

ज़िन्दगी वो है जो औरों के लिए मिट जाये।
शम्मा की आग में परवाने जला करते हैं॥

आपके अक्ले तवज्जोह से मिली दिल को जिला।
आईना[३] साज़ से आइने बना करते हैं॥

शादमानी[४] हो कि ग़म अहदे[५] खिजाँ हो कि बहार।
कोई आलम हो मगर 'शाद' रहा करते हैं॥

---

१. ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग २. वफ़ा का वचन ३. दर्पण बनाने वाला ४. प्रसन्नता ५. पतझड़ का समय।

'कैफी' आज़मी

कुछ मुझको दोस्तों में नुमायाँ[1] तो कर गईं।
वो गर्दिशें पहुँच के जो मुझ तक ठहर गईं॥

अब जिस तरफ से चाहे गुज़र जाए काफ़िला।
वीरानियाँ तो सब मेरे दिल में उतर गईं॥

पैमाना टूटने का कोई ग़म नहीं मुझे।
ग़म है तो ये कि चाँदनी रातें बिखर गईं॥

लहरों से पूछता है ये दीवाना बार-बार।
कुछ बस्तियाँ यहाँ थीं बताओ किधर गईं॥

पाया भी उनको खो भी दिया चुप भी हो रहे।
इक मुख़्तसिर[2] सी रात में सदियाँ गुज़र गईं॥

१. उत्कृष्ट, स्पष्ट २. संक्षिप्त।
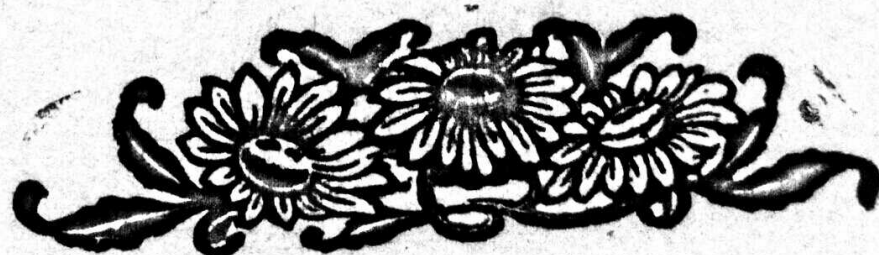
शाहिद 'अहसन' मुरादाबादी

जो दिल फ़रेब नज़ारा दिखाई देता है।
इसी में हुस्न तुम्हारा दिखाई देता है॥

तुम्हारे हुस्न की तशबीह[1] चाँद से क्या दें?
वो सिर्फ दूर से प्यारा दिखाई देता है॥

ये है कमाले[2] बसीरत कि शाने अज़्मे[3] जवाँ।
मुझे भंवर में किनारा दिखाई देता है॥

उसी मुक़ाम पे गिरता है तिशना लब पंछी।
जहाँ हयात का धारा दिखाई देता है॥

ये छा रही है जो तौबा शिकन घटा 'अहसन'।
कुछ इसमें उनका इशारा दिखाई देता है॥

१. उपमा २. देखने की योग्यता ३. दृढ़ निश्चय, सम्पूर्ण उत्साह।

'अली' अहमद जलीली

इशक़ हर इक का काम नहीं है।
राह गुज़र[१] ये आम नहीं है॥

जिन राहों में दाम नहीं है।
उनसे मुझे कुछ काम नहीं है॥

ऐसी तमन्नाएँ भी बहुत हैं।
जिनका कोई नाम नहीं है॥

उफ़ ये उजाला रुखसारों[२] का।
इन सुबहों की शाम नहीं है॥

पीना चाहा पी ली हमने।
मौसम पर इलज़ाम नहीं है॥

हाय घटा भी कब आई है।
जब हाथों में जाम नहीं है॥

ग़म को 'अली' सीने से लगा ले।
ये बखशिश कुछ आम नहीं है॥

---

१. मार्ग, रास्ता २. कपोलों।

प्रकाश नाथ 'परवेज़'

हुस्न पाबन्दे जफ़ा हो जैसे।
ये कोई खास अदा हो जैसे॥

यूं तेरी याद है मेरे दिल में।
किसी मरघट का दिया हो जैसे॥

हो गया सूख के काँटा हर फूल।
ये महकने की सज़ा हो जैसे॥

मेरी फ़ुरक़त[1] का ग़म आणीं आलम।
छुप के तू देख रहा हो जैसे॥

देखकर तुझको ये होता है गुमां[2]।
तू मेरे दुःख की दवा हो जैसे॥

उनको यूं ढूंढ़ रहा हूं 'परवेज़'।
इश्क़ से हुस्न जुदा हो जैसे॥

---

१. जुदाई, विरह २. भ्रम।

'शाज़' तमकनत

मेरे नसीब ने जब मुझसे इन्तकाम[1] लिया।
कहाँ-कहाँ तेरी यादों ने हाथ थाम लिया।

फिज़ा की आँख भर आई, हवा का रंग उड़ा।
सुकूते[2] शाम ने चुपके से तेरा नाम लिया।

वो मैं नहीं था कि इक हर्फ़ भी न कह पाया।
बो बसी थी कि जिव ने तेरा सलाम लिया॥

हर एक खुशी ने तेरे ग़म की आबरू रख ली।
हर एक खुशी से तेरे ग़म ने इन्तकाम लिया॥

वो मारका[3] था कि फ़तहो[4] शिकस्त भी न मिली।
वो ना मुराद ने क्या जाने किस से काम लिया॥

१. प्रतिशोध, २. संध्या का सन्नाटा, ३. संघर्ष युद्ध, ४. हारजीत।

जमीला बानो

पेश अंजामे मुहब्बत है खुदा ख़ैर करे ।
शाम से सुबह का मातम है ख़ुदा ख़ैर करे ॥

इश्क तौजीहै[1] मुहब्बत पे तुला बैठा है ।
हुस्न हर बात में मुबहम[2] है ख़ुदा ख़ैर करे ॥

गुल की आग़ोश[3] में ये क़तराये मासूम नहीं ।
शोला आलू[4] दये शबनम है ख़ुदा ख़ैर करे ॥

इस तरफ मैं हूँ फ़कत और जुनून[5] पै हम ।
उस तरफ होश का आलम है ख़ुदा ख़ैर करे ।

कल जो कौंदी थी तो खड़के थे चमन के पत्ते ।
आज इकताबिश[6] पै हम हैं ख़ुदा ख़ैर करे ॥

अब जमीला नहीं जुर्ज[7] मर्ग इलाजे ग़मे दिल ।
निगहें दोस्त ही बरहम है ख़ुदा ख़ैर करे ।

---

१. प्रेम का स्पष्टीकरण, २. अस्पष्ट, ३. गोदी वक्ष, ४. लिपटा हुआ शबनम से, ५, निरन्तर दीवानापन, ६. चमक, ७. मृत्यु के सिवाय ।

'नसीम' शहजहाँपुरी

दिलो निगाह पे आलम अजीब से गुज़रे।
वो अजनबी की तरह जब क़रीब से गुज़रे॥

वो यूं मेरे दिले हसरत नसीब से गुज़रे।
कशाँ[१]-कशाँ कोई जैसे क़रीब से गुज़रे॥

न जाने कितनी निगाहें उठीं हमारी तरफ़।
जब अनजुमन में हम उनके करीब से गुज़रे॥

निगाह को रही दीदार की हवस बाकी।
वो बोहिजान कुछ इतना करीब से गुज़रे॥

तेरी निगाह में जो ज़िंदगी का हासिल थे॥
तेरे बग़ैर वो लम्हे अजीब से गुज़रे॥

न जाने क्यों रहे उलफ़त में हादिसाते जहाँ।
निगाह फेर के मेरे करीब से गुज़रे॥

१. सांसारिक घटनाएँ।

'फ़ैयाज़' ग्वालियरी

उनको देखा न कोई उनके बराबर देखा।
देखा देखा मेरी आँखों[1] का मुकद्दर देखा॥

इक निगाहें गलत अन्दाज न थी साकी को।
उसने देखा मेरी जानिब तो बराबर देखा॥

उनकी किस्मत से उलट जाती है चेहरे से नकाब।
आपने देखने वालों का मुकद्दर देखा।

देखिये हमसे न छिपये वो वफ़ा केश हैं हम।
उम्र भर आँख में रखा जिसे दम भर देखा॥

आसमानों से उतर आये सितारे 'फ़ैयाज़'
कूए जाना[2] में तवाफ़े[3] महो अख़तर[4] देखा॥

---
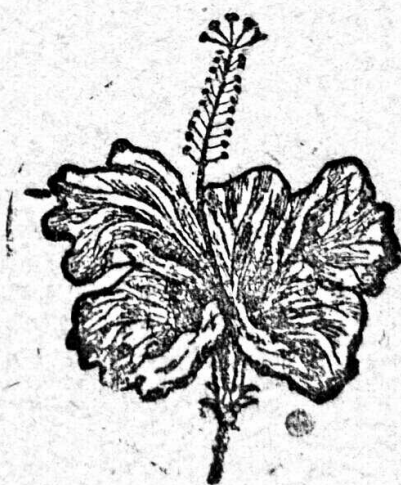
१. भाग्य, २. प्रेमिका की गली, ३. नृत्य, परिक्रमा, ४. चन्द्रमा और तारों का।

चन्द्र प्रकाश 'जौहर' बिजनौरी

मुहब्बत हासिले[1] ग़म हो न जाये।
कहीं ये जख़्म मरहम[2] हो न जाये॥

ज़रा आहिस्ता बादे सब्ह[3] गाही।
मिज़ाजे[4] यार बरहम[5] हो न जाये॥

न देखो दिल को इतनी बे दिली से।
ये शोला बुझ के शबनम हो न जाये॥

मेरा रुक जाना ये गम सुनके 'जौहर'।
किसी की आँख पुर[6] नम हो न जाये॥
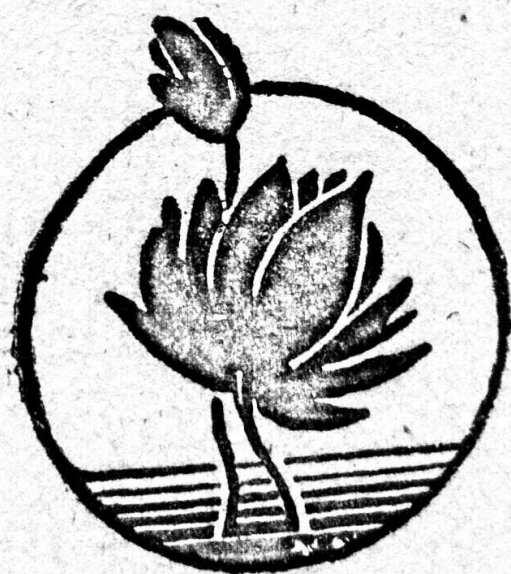
१. गम का कारण, २. मल्हम, दवाई, ३. प्रभाव पवन, ४. स्वभाव, ५. क्रुद्ध ६. भीगजाना।

'प्रेम' वारबर्टनी

फिर परेशां तेरे चेहरे पे सुनहरी लट नहीं।
चैन मुझ को फिर किसी करवट नहीं॥

जल रही है कितनी ख़ामोशी से सारी कीयनात[1]।
चाँदनी क्या है? अगर जलता हुआ मरघट नहीं॥

एक सिजदा हूं जबीने[2] शौक से उभरा हुआ।
मैं तेरे दरवाज़े की टूटी हुई चौखट नहीं॥

चाँदनी का जिस्म पाकीज़ा है तेरी ही तरह।
रात के बेदाग बिस्तर पर कोई सिलवट नहीं॥

ज़ब से तू सुसराल में है जिन्दगी बे कैफ़ है।
तेरे पनघट पर तेरी सखियों के वो झुरमुट नहीं॥

'प्रेम' शर्माती हैं चंचल गोपियाँ किस से भला।
तुझ से बढ़कर सारे गोकुल में कोई नटखट नहीं॥

१. सृष्टि, २. माथा-मस्तक, ३. आनन्द।

अमर चन्द 'कैस' जालन्धरी

अदाये हुस्न पशैमाँ[१] है देखिये क्या हो।
दिमग़े इश्क परेशां है देखिये क्या हो।

बहार जोश पे आई नहीं अभी लेकिन।
न आस्तीं न गिरेबाँ है देखिये क्या हो ।।

हवायें दुशमने तकवा[२] घटायें तौबा शिकन।
खलल पज़ीर[३] अबईयाँ है देखिये क्या हो ।।

न पूछ हाल दिले ग़म नसीब ऐ हम दम।
बग़ैर वजहा[४] परेशाँ है देखिये क्या हो ।।

नहीं है क़ैस को मुल्लक़लमीजे दुशमनो दोस्त।
शरीफ़ किस्म का इन्साँ है देखिये क्या हो ।।

१. पछताया हुआ, २. पवित्रता, ३ खंडित कंपित, हानि की ओर अग्रसर, ४. कारण।

'शौक' सालिकी लखनवी

रहे वफ़ा में कुछ ऐसे भी मोड़ आये हैं।
हम अपना खून जहाँ पर निचोड़ आये हैं।।

वो आसरे भी क़यामत हैं जिन्दगी के लिए।
जो मेरे टूटे हुए दिल को जोड़ आये हैं।

चले थे जिनके लिए तेज़ गाम दीवाने।
वो मंज़िलें तो बहुत दूर छोड़ आये हैं।।

हम अहले होश के दामन तो फट गये लेकिन।
जुनूं के बढ़ते हुए हाथ तोड़ आए हैं।

जो फूल से भी ज़्यादा थे नर्म दिल ऐ "शौक"।
वो कोहें ज़ुलमौ सितम को भी तोड़ आये हैं।।

'शादाँ' बिहारी

बड़े हसीं हैं नज़ारे तुम्हारी बस्ती में।
क़दम क़दम पे इशारे तुम्हारी बस्ती में॥

तुम्हारी बस्ती के ज़र्रे भी जगमगाते हैं।
ज़मी पे चांद सितारे तुम्हारी बस्ती में।

ये वो जगह है कि खुशबूए ज़ुल्फ़ के आगे।
गुलों ने हौसले हारे तुम्हारी बस्ती में॥

जो तुमने जीती है बाजी कोई कमाल नहीं।
हम अपने शौक़ में हारे तुम्हारी मस्ती में॥

गुज़ारने को शबे ग़म तुम्हारे "शादाँ" में।
चुने नज़र से सितारे तुम्हारी बस्ती में।

L. N. Patel

सैयद 'हुबाब' तिरमिजी

उनसे होती थीं जब मुलाकातें।
दिन जवाँ थे हसीन थीं रातें॥

चन्द रोज़ा शबाब है प्यारे।
चार दिन की हैं चाँदनी रातें॥

ख़्वाब जैसे सुना रहा हो कोई।
उफ़ रे अहदे शबाब की बातें॥

न खुले लब तो क्या हुआ उनसे।
आँखों आँखों में हो गई बातें॥

तंगिये वक़्त ने किया मजबूर।
अब न फ़ुर्संत न वो मुलाकातें॥

मौजे तूफ़ाँ ने मुंह की खाई।
सुन रहे हो "हुबाब" की बातें॥

'खुसरो' मतीन

तेरी जवानी।
एक कहानी ।।

हुस्न की फितरता[1]।
किसने जानी ।।

तेरे आगे ।
मय है पानी ।।

दौलत किसके।
घर की रानी ।।

तन में अग्नि ।
आई जवानी ।।

तेरी ज़ुल्फें ।
शाम सुहानी ।।

दूर है "खुसरौ ।
मन की रानी ।।

---

१. प्रवृत्ति

'ज़ेब' साहिबा नक्वी

दिल सुलगता रहा जिन्दगी बुझ गई।
शम्मा जलती रही ज़िन्दगी बुझ गई ।।

दूर हो कैसे तारीकिये शामे ग़म।
शम्मे दिल लो सरे शाम ही बुझ गई ।।

जब भी आई हँसी उस लबे नाज़ पर।
फूल मुरझा गये हर कली बुझ गई ।।

क्या बताऊँ तुझे करते शामे[1] अलम।
चाँद तारीफ है चाँदनी बुझ गई ।।

लेके शम्मा मुहब्बत की आग़ोश में।
बुझ गई बुझ गई ज़िन्दगी बुझ गई ।।

जब मिलता था इस दिलको जिससे सुकूँ।
हाय सीने की वो आग भी बुझ गई ।।

१. दुःखों और विरह की साँझ की पीड़ा।

डाक्टर माया खन्ना 'राजे'

कोई नामा[१] नहीं पयाम[२] नहीं।
ये मुहब्बत का एहतराम[३] नहीं ।।

गर्दिशों[४] की नवाज़िशें[५] तौबा।
बादा[६] नोशी भी अब हराम नहीं।

इक परेशाँ है दूसरा शादाँ।
रस्म जीने की भी तो आम नहीं।

दैरो[७] काबा में ठोकरें खाईं।
हक़[८] शनीसां का ये मुक़ाम नहीं ।।

जिनके पासे अदब नहीं "राजे"
बज़्मे आलम में उनका काम नहीं ।।

---

१. पत्र, २. सन्देश, ३. आदर, ४. दुःख, ५. देन, ६. शराब पीना
७. मंदिर, काबा, ८. सत्य को जानने वाले।

मुमताज़ जहाँ जफ़र 'ताज'

कह मशाँ रस्ते-रस्ते बिखर जायेगी……
चाँदनी मेरे आँगन उतर आयेगी।

आज आने का वादा है आयेंगे वो……
आज झोली मुरादों से भर जायेगी।

मेरी बाहों में चूड़ी खनकने लगी……
मेरे पैरों में पायल खड़कने लगी।

मेरे छोटे से घर की ये सूनी फिज़ा
अब सुरीले से नग़मों से भर जायेगी।

उड़ चलो आसमाँ की हदों से परे……
हाथ में तुम मेरा हाथ थामे हुए

प्यार की सरहदों में मुझे ले चलो……
ज़िन्दगी फिर तो ज़न्नत नज़र आयेगी।

कितने अरमान से चाहती हूं तुम्हें
किन तमन्नाओं से पूजती हूं तुम्हें।

तुम मुझे ताज अपना बना लो अगर,
मेरी तक़दीर फिर से संवर जायेगी।

'वसी' सीता पुरी

खाक होने पहले से परवानो ।
रौश्दी का मिज़ाज पहचानो ।।

क्यों खुशी है शिकस्ते[1] तौबा पर ।
टूटना है तुम्हें भी पैमानो ।।

क्या तुम्हें भी तलाशे साहिल है ?
अब कहाँ जा रहे हो तूफ़ानो ।

खुद जबीं हम झुकाये बैठे हैं ।
किस सनम[2] ने कहा खुदा मानो ।।

दौरे हाज़िर का ये तकाज़ा है ।
भूल भी जाओ खुद को दीवानो ।।

है तुम्हारा जैसा आज "वसी"
देख लो बे ज़ुबान इन्सानो ।।

१. टूटना तौबा का, २. माशूक मूर्ति, प्रतिमा ।

'साहिरा' बेगम

कौन समझाये दिले नादाँ को।
दोस्त समझा है दुशमने जाँ को ॥

फस्लेगुल[१] में न पूछ क्या गुज़री।
सीने बैठे थे गिरबानों को।

ग़ैर कोसिजदा कुफ़्र है लेकिन।
दिल को रोकूं कि अपने ईमाँ को ॥

इक तवज्जोह सम्भाल सकती है।
दिले मुज़्तर[२] को चशमे[३] गिरियाँ को ॥

"साहिरा" अब भी इक तअल्लुफ़[४] है।
मेरे अशकों को उनके दामों[५] को ॥

---

१. बहार, २. दुःखी दल, ३. रोती आँख, ४. सम्बन्ध, ५. दामन।

'क़ैस' राम पुरी

आज रुस्वा हैं तो हम कूचा ओ बाजार बहुत ।
या कभी गीत भी गाते थे सरेदार बहुत ।।

दिल के जख़्मों को भी मुमकिन हो तो देखो वरना ।
चाँद से चेहरे बहुत फूल से रुखवार[१] बहुत ।।

अजनबी बन के रहे शहर में हम हालांकि ।
साया-ए-ज़ुल्फ़[२] बहुत, साया-ए-दावार[३] बहुत ।।

लुट गये एक ही अंगड़ाई में ऐसा भी हुआ ।
उम्र भर धरते रहे बनके जो हथियार बहुत ।।

अपने हालात संवारो तो कोई बात बने ।
मिल भी जायेंगे कभी गेसुए[४] ख़मदार बहुत ।।

"क़ैस" नाक़दरिये, अहलान[५] का रोना है फ़ुज़ूल ।
कोई यूसुफ़[६] ही नहीं वरना खरीदार बहुत ।।

---

१. कपोल, २. ज़ुल्फों की छाया, ३. दीवार की छाया, ४. घुंघराले केश,
५. एक पैगम्बर जिन्हें उनके भाइयों ने दास बनाकर बेच डाला ।

हज़रत सादिक देहलवी

उलफ़त से पहले अपना अनजाम[1] सोच लेना।
आते हैं इसमें अक्सर इलज़ाम सोच लेना॥

ऐ दिल किसी से तूने क्यों प्यार कर लिया है।
ये ग़म करेगा तुझको बदनाम सोच लेना॥

किसमत के फैसले का मैं भी तो मुनतज़िर हूं।
मेरे लिए भी कोई पैगाम सोच लेना॥

ये तज़किरा हमारा अफ़साना है तुम्हारा।
इस दास्तां का तुम ही क़ोई नाम सोच लेना॥

इशको वफ़ा की राहे पुरपेच[2] पुरख़्तर[3] हैं।
ऐ रहर वे मुहब्बत अनजाम सोच लेना॥

दुनियाँ के तकाज़े कुछ और ही है "सादिक"।
उनकी नज़र के क्या हैं पैग़ाम सोच लेना॥

---

१. परिणाम २. टेढ़ी मेढ़ी ३. खतरों से भरी राह।

काशिफ़ अलहाशिमी उज्जैनी

जो तुमने दूर रहकर हमको तड़फाना नहीं छोड़ा।
तो सुन लेना हमें तनहाई ने ज़िन्दा नहीं छोड़ा॥

मैं वो बिगड़े हुए हालात पीछे छोड़ आया हूं।
कि जिन हालात ने बरसों पीछा नहीं छोड़ा॥

बहारों ने तसल्ली दी खिज़ाँ[1] ने आँख दिखलाई।
मगर शबनम ने रोना फूल ने हँसना नहीं छोड़ा॥

बहुत मुमकिन है दिल जलकर किसी दिन राख हो जाये।
जो इन जलते हुए लमहालत[2] ने पीछा नहीं छोड़ा॥

वही तिशना दहन है मयकदे[3] की आबूस "काशिफ़"
कि जिसने उम्र भर साक़ी का दरवाज़ा नही छोड़ा॥

१. पतझड़, २. क्षणों, ३. मधुशाला।

मुहम्मद यासीन

बोलते और देखते चेहरे ।
ये सवालात पूछते चेहरे ।।

शाह राओं पे आम मिलते हैं ।
अपने जिस्मों को ढ़ढ़ते चेहरे ।।

कल की सच्चाईयों से डरते हैं।
अपने बारे में सोचते चेहरे ।

ज़ेहन की ख़ामुशी से उभरे हैं ।।
कितनी यादों के डूबते चेहरे ।।

जाने किस रंग रूप के होंगे ।
ये नकाबों से झाँकते चेहरे ।।
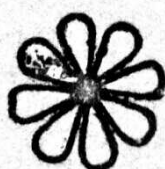
शकील मज़हरी

दीप अशकों[1] के बुझाने का इरादा न करो।
वादिये गम में उजाला है अंधेरा न करो॥

जो भी हो जाये ग़मे इश्क का चर्चा न करो।
दिल की मासूम तमन्नायें हैं रूसवा[2] न करो।

हिज्र[3] की आग में तप कर ही निखरती है गज़ल॥
हमको जलाने दो यूँही ज़ुल्फ़ का साया न करो।

कौन उड़ती हुई खुशबू को पकड़ पाया है।
काम जो हो न सके उसका इरादा न करो॥

आज तो यादों के जुगुनू भी हैं सहमे-सहमे।
आज की रात कोई ख़्वाब सजाया न करो॥

जाग जायेंगे दिले ज़ार के अरमान 'शकील'
तुम मेरा गीत मेरी धुन में भी गाया न करो॥

---

१. अश्रु २. बदनाम ३. विरह।

सग़ीर अहमद 'सूफी'

काम आ सकेगा जज़बये बे अख़्तियार क्या।
शौक़े जुनूं नवाज़ तेरा ऐतबार क्या।

बारे गरां बने हैं जो अपने वजूद पर।
वो खुद उठा सकेंगे ज़माने का वार क्या॥

हर हादसे ने दिल को दिया ज़खमे आगही।
हमको मिटा सकेगा ग़म रोज़गार क्या।

जब हो गये हयात के लम्हे ख़िज़ां नसीब।
पैगाम लेके भाई है फस्ले बहार क्या॥

हंगामा-ए-वजूद में जो चूर हो गया।
उस लम्हये निशात का अब इंतज़ार क्या॥

भाई जिन्हें न रास फिज़ाये चमन कभी।
ऐसे गुलों पे आयेगा सूफी निखार क्या॥
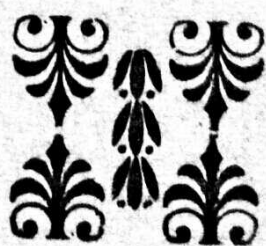
'अख़तर' बस्तवी

मेरी हयात[1] है प्यासी तेरी नज़र की क़सम।
बस इक निगाह है बाकी तेरी नज़र की क़सम॥

उठी जो चशमे[2] करम दुसरों केसिम्त[3] गई।
हुआ न फिर भी मैं शाकी तेरी नज़र की क़सम॥

ख़फ़ीफ़[4] भी गर मस्त अंखड़ियों का पड़े।
सरूर बख़्श[5] हो पानी तेरी नज़र की क़सम॥

जनूने इश्क का जादू जहाँ मैं जब भी चला।
ख़िरद ने आँख चुराली तेरी नज़र की क़सम॥

समझ स कीन मेरी आँख जिन इशारों को।
वो लाये दिल पे खराबी, तेरी नज़र की क़सम॥

१. जीवन २. कृपालु आँख ३. ओर ४. हल्का प्रतिबिम्ब ५. आनन्द-दायक।

"दीपक" शिकोहाबादी

ख़ूबसूरत ख़्वाब देते जाइये।
ज़ीस्त[१] के असबाब[२] देते जाइये ।।

जाते-जाते इक उछटती सी नजर।
साज़[३] को मिज़राब देते जाइये।

मेरी खातिर इक तबस्सुम[४] बर महल।
आँसुओं की आब देते जाइये ।।

मुज़तरिब[५] ही मुझको रखना है अगर।
फ़ितरते[६] ईमान देते जाइये ।।

ज़िन्दगी बरहम किये जाते हैं आप।
ज़ब्त की भी ताब देते जाईये ।।

आप दीपक वक़्त की रूदाद[७] को।
इक दरख्शाँ[८] बान देते जाईये ।।

---

१. जीवन २. साधन ३. बाजा ४. मुस्कान ५. दुःखी, चिंतित ६. पारे के समान प्रवृति बाला। ७. दास्तान।

'जामी' चिड़िया कोटी

हम अपना हाले दिल बा चश्मे नम[१] कहते तो क्या कहते ।
सितमगर सुन के रूदादे[२] अलम कहते तो क्या कहते ॥

सनम खाने में भी नूरे ख़ुदा मुझको नज़र आया ।
मेरी नज़रों की ये अहले हरम कहते तो क्या कहते ॥

मताए होश भी गुम हो गई थी उनके जलबों में ।
सितम कहते तो क्या कहते, करम कहते तो क्या कहते ॥

न आँसू थे, न आहें थीं, न लब पर था कोई शिकवा ।
हम अपना हाले दिल अब इससे कम कहते तो क्या कहते ॥

चले थे सूए[४] काबा और मख़ाने में आ बैठे ।
जनाबे शेख़ के नक़्शे[५] क़दम, कहते तो क्या कहते ।

दिली जज़बात का इज़हार है इसके सिवा "जामी"
गज़ल सुनकर मेरी अहके कलम कहते तो क्या कहते ॥

१. भीगी आँखें २. ग़म की दास्तान ३. मंदिर ४. काबे की ओर
५. पद्चिन्ह ।

मनोहर शर्मा 'सांगर'

तबस्सुम[1] रेज़ है कोई हसी तहरीर आँखों में।
मिलन के रत जगों की है अभी तासीर[2] आँखों में

न जाने किन बहारों का है ग़म तहरीर आँखों में।
है इक सहमी हुई सी बेज़ुवाँ तक़रीर आँखों में।।

हुए सदमा बरस जब गाँव हमें पंघट पे आया था।
कोई राँझा बसाये हीर की तस्वीर आँखों में।।

वो ग़म जिसको ज़माने से छुपाना चाहते थे हम।
उसी की कर रहे हैं अश्क[3] अब तशहीर आँखों में।।

नज़र आते हो "सागर" खोमे-खोमे बताओ तो।
बसी है क्या किसी की मोहिनी तस्वीर आँखों में।।

१. मुस्कान २. प्रभाव ३. आँसू

'शमसी' तेहरानी

यूं जान को अपनी खो रहा हूं।
जैसे कि किसी का हो रहा हूं।।

तुझसे तो कोई गिला नहीं है।
मैं अपनी वफ़ा को रो रहा हूं।।

रो-रो के किसी आरजू में।
हर दाग़े जिगर को धो रहा हूं।।

शायद कि नसीब यूं हो साहिल[१]।
किशती को मैं ख़ुद डुबो रहा हूं।।

ऐ वक़्त की धूप तेरे सदके।
मैं साया-ए- गम में सो रहा हूं।।

इस अहद[२] की फ़िक्रे[३] नौ में 'शमसी'
मैं हुस्ने गज़ल को सुमो रहा हूं।

---

१ किनारा २. युग ३, नई चेतना

'अलताफ़' मुशहदी

कौन एहसान ले बहारों का ।
कुर्ब[1] हासिल रहे जो भारों का ।।

साथ रस्ते में छोड़ देते हैं ।
कुछ भरोसा नहीं सहारों का ।।

गुल्ल रंगीनियों में कर लीजे ।
तूर रौशन है लाला ज़ारीं का ।।

दूर तक कुछ पता नहीं चलता ।
मेरे तक़दीर के सितारों का ।।

कौन आँखों पे ऐतवार करे ।
क्या भरोसा है आबशारी का ।।

जब तबस्सुम में फूल खिलते हैं ।
दिल धड़कता है ख़ुल्दज़ारों[4] का ।।

---

१. विकटता २. स्नान ३. झरने ४. स्वर्ग समान, चमन

प्रो० अदीब हसन 'अदीब'

आपने सामने जब रखा आईना।
आईना देखता रह गया आईना॥

हमने देखा किया बारहा[१] आईना।
देख के रख दिया आपको साईना॥

आईना शर्म से पानी पानी हुआ।
बन गई आपकी हर अदा आईना॥

सादगी भी कयामत से कुछ कम नहीं।
सादगी है तेरे हुस्न का आईना॥

मेरे अशकों में अपनी झलक देख ले।
मेरे आँसू बने हैं तेरा आईना॥

तोड़कर मेरा दिल तूने सोचा कभी।
चूर शीशा हुआ या तेरा आईना॥

मैं भी देखूं 'अदीब' उनकी जलवा गरी।
जिनके परतों[२] से दिल बन गया आईना॥

---

१. बारबार २. प्रतिबिम्ब

मसऊदा 'हयात'

दिल में तेरी नज़र के सितारे उतर गये।
हर लम्हये[1] हयात को जलवों से भर गये।।

अब तक मेरे ख़्याल की खुशबू है मौजज़न।
वो लाख दिल पे वक़्त के तूफ़ा गुज़र गये।।

दिल पे खिज़ा का बार है फिर भी कभी-कभी।
देखा जब उनको नक़्शे मुहब्बत निखर गये।।

रौशन न कर सके जो दिलों में चिराग़े इश्क़।
दुनिया-ए-रंगों नूर से वो बेखबर गये।।

बे मेहरी-ए-नज़र का तेरी क्या गिला करें।
हम ही तेरी निगाह से बचकर गुज़र गये।।

बेसूद[2] है "हयात" ये हसरत, ये इज़तराब[3]।
जब कायनाते[4] शौक़ के सामाँ बिखर गये।।

१. जीवन के क्षण २. व्यर्थ ३. बेचैनी ४. सृष्टि

मुबीन 'शारिक़'

अपनों के सितम याद न ग़ैरों के करम याद ।
आसूदा[१] तबीयत हूं खुशी याद न ग़म याद ।।

ए दोस्त ! के अब तेरा करम हो कि सितम हो ।
हर रंगे मुहब्बत है न उनवाने[२] करम याद ।।

देखे न कोई हमको मुहब्बत की नज़र से ।
आ जाता है भूला हुआ अफसाना-ए-गम याद ।।

मिट जाता है हर नक़्शे वफ़ा राहे हवस में ।
रह जाती है बस इश्क की दौलते गम याद ।।

आया है गमे दोस्त में ऐसा भी इक आलम ।
दुनिया थी हमें याद न दुनिया को थे हम याद ।।

इस दौरेपुर[३] आशोब में क्या कदरे जुनूं हो ।
न[४] अहल भी करते हैं तेरी ज़ुल्फ़ के ख़म याद ।।
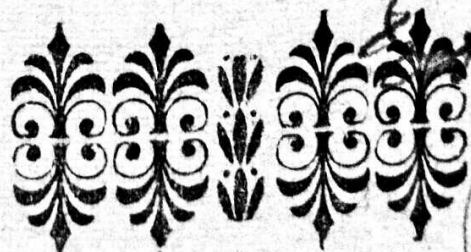
१. प्रवृत्ति से संतुष्ट स्वभाव का   २. कृपा दृष्टि के संदर्भ से   ३. दुःखों और बुराईयों का युग   ४. अयोग्य

ओवैस अहमद 'दौरां'

दिन ढले चाँद उगे का[1] कुले जाना महके।
कहीं मेंहदी कही झूमट कहीं अफ़शाँ[2] महके ।।

उनकी पायल की मधुर तान पे अम्बर झूमे।
उनके मलबूस[3] की ख़ुशबू से गुलिस्तां महके ।।

कोई शर्मीली कली फिर मेरे घर में उतरे।
काश फिर से मेरे ख़्वाबों का गुलिस्तां महके ।।

रात ढलने में बहुत देर अभी बाकी है।
दिल ये कहता है सरे शाम ही अरमाँ महके ।।

भीनी-भीनी सी ये गुँजान दरख़्तों की महक।
जैसे अलबेली कोई शामे बहाराँ महके ।।

यूं है बिखरी हुई 'दौराँ' की गज़ल की खुशबू।
जिस तरह निकहते[4] पैराहने[5] खूबाँ महके।
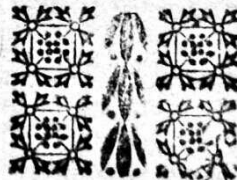
१. सुन्दरियों के केश २. चमकी मांग की ३. वस्त्र ४. खुशबू
५. माशूकों के वस्त्र

दिवाकर 'राही'

यह ज़ाहिद[1] की नहीं मेरी जबीं[2] है।
कि ये बेगाना[3] ये ख़ुल्देबरीं[4] है॥

अभी झुक जायेंगी उनकी निगाहें।
अभी शायद मुझे देखा नहीं है॥

तुम्हें सोना है सो जाओ सितारो।
मुझे तो उनके वादे पर यक़ीं है।

भरोसा कर रहा हूं दोस्तों पर।
भला मुझ सा भी दीवाना कहीं है॥

सलीक़ा चाहिये ऐ क़ल्बे मुज़तर।
मुहब्बत है कोई सौदा नहीं है॥

अभी तक़ इश्क का मअयार[5] "राही"
जहाँ हम छोड़ आये के वहीं है॥

१. भुल्ला २. माथा ३. असंबंधित ४. स्वर्ग ५. स्तर।

'तबस्सुम' (फिल्म स्टार)

इस दौर में जीना भी इबादत[1] है 'तबस्सुम'
हर साँस यहाँ कैसे कयामत[2] है "तबस्सुम"

लो अब उनको भी अब हमसे शिकायत है 'तबस्सुम'
ये और क़यामत पे क़यामत है 'तबस्सुम'

दुनिया की हर बात पे हम सिर को झुका दें।
शायद यही अब जीने की सूरत है 'तबस्सुम'

हर ज़ुल्म के हर जौर के काबिल मुझे समझा।
ये भी तो ज़माने की इनायत[3] है 'तबस्सुम'

जाईज़ है हर इक फ़ेल जहाँ के लिए लेकिन।
मेरे ही लिए ज़ुर्म, मुहब्बत हैं 'तबस्सुम'॥

१. उपासना २. प्रलय ३. कृपा।

'नाके' रिज़वी

ये मासूम बातें ये नीची निगाहें ।
बता दो न हम किस तरह तुमको चाहें ॥

भला सूए फिरदौस[१] कैसे वो देखे ।
जिसे मिल गई हो तेरी जलवा[२] गाहें ॥

मुहब्बत में ऐसे मुक़ाम आ गए हैं ।
न आँखों पे आंसू न लब पर हैं आहें ॥

हमीं को सफर का सलीक़ा[३] नहीं है ।
कठिन तो नहीं थीं मुहब्बत की राहें ॥

मैं इस पुरसिशे[४] ग़म के कुरबान जाऊँ ।
निदामत[५] में डूबी हुई हैं निगाहें ॥

भला ये भी "नाफे" कोई जिन्दगी है ।
न हम उनको चाहें, न वो हमको चाहें ॥

१. स्वर्ग २. रूप केन्द्र ३. ढंग ४. पँछ ५. पश्चाताप ।

मनशाउल रहमान 'मनशा'

प्यार को मोजिबे आज़ार[1] न समझा जाय।
ये हसी गुल है इसे खार न समझा जाये॥

जो नज़र क़त्ल भी करती हो मसीहाई[2] भी।
क्यों भला इसको फुसँकार[3] न समझा जाये॥

इसमें इक़रार[4] का पहलू भी नहीं होता है।
उनके इन्कार को इन्कार न समझा जाये॥

ये भी एक ज़िन्दा दिला का है तकाज़ा यारो।
ज़िन्दगानी को कभी बार[5] न समझा जाये॥

दिल के अरमानों का खूं होता हो जिस महफ़िल में।
क्या उसे हम सिफ़तेदार[6] न समझा जाये॥

१. रोग २. जीवन दान देने की योग्यता, "मसीहा" ईसा के विषय में है कि वे जीवन दान देते थे। ३. जादू ४. स्वीकार ५. बोझ ६. सूली के समान।

अलीम 'अख़्तर'

ख़लिशे[1] लज़्ज़ते[2] आज़ार[3] मुझे दे जाओ।
फूल ले जाओ मगर ख़ार[4] मुझे दे जाओ॥

उफ़ ये इकरारे मुहब्बत, ये शिकस्ते पिन्दार।
यही टूटी हुई तलवार मुझे दे जाओ॥

लज़्ज़ते बायदे फ़रदा[6] तो बहुत देख चुका।
आज तो तलख़ी[7] -ए-इन्कार मुझे दे जाओ॥

वक़्ते[8] रुख़सत ये निगाहों में नमी ठीक नहीं।
लाओ ये चश्मे गुहर[9] बार मुझे दे जाओ॥

उसने भेजी है मुझे मौसमे[10] गुल की सौगात।
'अखतर' उस शोख़ ने लिखा है चले भी आओ॥

"ख़्वाब का आलमे बेदार मुझे दे जाओ॥"

१. वासक २. आनन्द ३. रोग ४. अहं की पराजय ६. कल का वायदा ७. नकार की कटुता ८. विदाई का समय ६. मोती रोलते नयन १०. बहार।

'आसिम' बरेलवी

खिलता हुआ गुलाब है ताज़ा कवँल हैं आप।
मेरे लिए "मजाज़"[१] की ताज़ा गज़ल हैं आप॥

हिन्दी ज़ुबाँ का गीत है, उर्दू गज़ल हैं आप।
हर महिफ़िले ख्याल[२] में ज़रबुल[३] मसल हैं आप॥

ये शोख़ियाँ ये नाज ये नखरे ये बाँकपन।
किस हुस्ने लाजवाब का हुस्ने[४] अमल हैं आप॥

इसमें निहाँ है आपका अक्से[५] रुखे जमील।
मेरे ख़लूसे इश्क का रद्दे[६] अमल हैं आप॥

हर एक अदा है फितनायें महशर[७] लिए हुए।
दोनों जहाँ के हुस्न में जरबुल मसल हैं आप॥

है इसमें, आपमें दीरीना[८] रब्ते[९] खास।
'आसिम' है रिन्द, बाद-ए-हुस्ने[१०] अज़ल हैं आप॥

---

१. शायर मुजाज़ २. (कल्पना के लोक में), सोच्च विचार की गोष्ठी ३. कहावत ४. कार्य कुशलता ५. सुन्दर चेहरे का प्रतिबिम्ब ६. प्रतिक्रिया ७. प्रलय का फ़ितना ८. पुराना ९. सम्बन्ध १०. सृष्टि के सौन्दर्य की शराब।

कृष्ण 'मोहन'

निखश है तेरा रूप शबे[1] माहताब में ।
तेरे बदन की आँच है जामे शराब में ।।

पीने में आज और ही लुत्फ़ो सुरूर है ।
मस्ती है एक और ही तेरे शबाब में ।।

शोले भड़क रहे हैं मेरे दिल में प्यार के ।
रौनक़ है जिनके दम से जहाने[2] ख़राब में ।।

मचली हुई है रात कि मैं पी-के बेपनांह ।
लहरा रहा हूं तेरी मुहब्बत के ख़्वाब में ।।

आँखों में आँखें डाल के पीने दे और भी ।
चाहत का रस है तेरे लबों के गुलाब में ।।

१. चाँदनी रात ।

'ज़िया' फतेहाबादी

जिस दिल पे करम चशमे[१] फ़र्सू बार को है।
ऐ बादे सहर[२] क्यों उसे बेदार[३] करे है॥

बन्दा हूं तेरे इश्क का ईमान की कहूं।
काफ़िर जो तेरे हुस्न से इन्कार करे है॥

वाबिस्ता[४] हुईं उससे मुहब्बत की उमीदें।
लो शिकवा शिकायत सरे बाजार करे है॥

साये से डरे है कि है दिल धूप का पाला।
क्या-क्या न इशारे तेरी दीवार करे है॥

लैला ने किया दीदा[५] ये मजनूं पे वो जादू।
सहरा पे गुमाने गुलों गुलज़ार को है॥

रखे है न तू कोई कमी जोरो जफ़ा में।
नादाँ है ये दिल फिर भी तुझे प्यार करे है॥

---

१. जादू भरी आँख की कृपा २. प्रातः की हवा ३. जगाना ४. संबंधित
५. आंख मजनूं की।

'रईस' रामपुरी

हमें कहते हैं पहचाने हुए हैं।
ख़ुदा जाने वो क्या जाने हुए हैं।।

वो चाहे बादा कश हों बे सलीक़ा।
मगर बदनाम मयख़ाने हुए हैं।।

कसम खा-खाके वादे करने वाले।
तेरे वादों को हम जाने हुए हैं।।

नज़र में बेरुख़ी लब पर तबस्सुम।
न जाने दिल में क्या ठाने हुए हैं।।

मुहब्बत कितनी पाकीजा हकीक़त।
मगर तखलीफ़[1] अफ़साने हुए हैं।।

हम ऐसे लोग भी कम होंगे शायद।
ख़ुद आगाही[2] में दीवाने हुए हैं।।

---

१. रचना २. आत्म जाद।

'उनवान' चिशती

पड़ते ही तेरे रुख़ पे नज़र चोंक पड़ी है।
क्या हुस्न में ज़ालिम तेरी ख़ुद साख़तगी है।।

ख़्वाबों में भी ज़ुल्फों का मुयस्सर नहीं साया।
आँगन में तमन्ना की अजब धूप खिली है।

हर चेहरा तेरा चेहरा है हर आँख मेरी आँख।
अब इश्क में पैदा ये नई बात नहीं है।।

आँखों में समाये हुए हैं कई चाँद से चेहरे।
और दिल में फ़कत फूल सी इक शक्ल बसी है।।

शायद ये करे रूह ने "उनवान" उजाला।
होठों पे जो ये एक किरन फ़ूट रही है।।
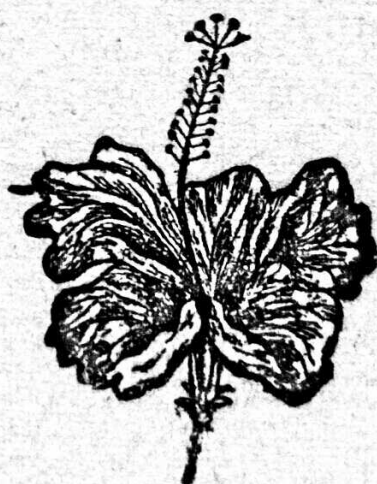
प्रो० 'बेताब' पीलीभीती

जाम भर भर मुझे इश्क का छलकाने दो।
ज़र्फ का नाम न लो आज छलक जाने दो॥

अश्क पोंछो न मेरे तुम मुझे तस्कीन न दो।
आज ये ग़म की घटा खुल के बरस जाने दो॥

तुम मेरे मोनिसो हम दम हो मेरे मुशफ़िक हो।
धोखा खाने दो मुझे दिल यूँही बहलाने दो॥

मैं मुसाफिर हूं बहुत दूर मुझे जाना है॥
ज़ुल्फ़ की छाँव में कुछ देर ठहर जाने दो॥

आज ज़ख्मे दिले "नेताब" पे मरहम रखने।
कुछ अगर आते हैं सहबान उन्हें आने दो॥

ब्रजलाल जग्गी 'राना'

ज़िन्दगी इश्क में इस तरह फ़ना करते हैं।
जैसे हम ज़ीस्त का इक फ़र्ज अदा करते हैं।।

ज़िन्दगी में जो मेरी बात न सुनते थे कभी।
मेरे मरने पे मेरे हक़ में हुआ करते हैं।।

उनकी मासूम जफ़ाओं का असर है शायद।
इतनी शिद्दत से हम मेहरो वफ़ा करते हैं।।

जिनको होती है गुलिस्तां से ज़रा भी निस्बत।
फूल की तरहः वो काँटों को चुना करते हैं।।

हुस्न फ़ितरत के तकाज़े से है पाबन्दे जफ़ा।
हम भी मजबूरे वफ़ा हैं कि वफ़ा करते हैं।।

हम सा न होगा कोई काफ़िरे मोमिन "राना"
देखकर हुस्ने सनम यादे खुदा करते हैं।।

'मख़मूर' सईदी

मआले तर्के अल्लुक भी हाय क्या निकला।
कि बेवफ़ा जिसे जाना था बावफ़ा निकला॥

बहुत दराज़ तेरे गम का सिलसिला निकला।
कहाँ से लेके चला था कहाँ तक आ निकला॥

पिघल गया नफ़ से शौक़ की हरारत से।
जो सँग दिल नज़र आता था मोम का निकला॥

वो मेरे पास खड़ा था मगर मिली जो नज़र।
तो दरम्यां कई सदियों का फ़ासला निकला॥

रुका-रुका सा तबस्सुम तो ये बताता है।
वो अजनबी तो मेरे ग़म से आशना निकला॥

गुज़र गई खलिशे आरज़ू में उम्र तमाम।
न तुम मिले न कभी दिल का हौसला निकला॥

श्री मती 'अंजुम' सोज़

बढ़ गई दिल की लगी दिल्लगी के पर्दे में।
हर खुशी न छिन जाये इस हँसी के पर्दे में।

बेखबर मसीहा भी क्या करे दवा कोई।
मौत छिप के आई है जिन्दगी के पर्दे में।।

शम्मा के जलाने से कब अंधेरे मिटते हैं।
तीरगी तो पलती है रोशनी के पर्दे में।।

देख के खुशी मेरी इस तरह न हैरां हो।
ज़ख्मे दिल सवंरते हैं इस खुशी के पर्दे में।।

'सोज़' दिल जवां होकर छेड़ता है ज़ख्मों को।
अशक घुट के मरते हैं बेबसी के पर्दे में।।

कु० आसिया 'शहला'

माह रुखों में नाम बहुत है।
दीवाना बदनाम बहुत है।।

तलखीए ग़म को बहलाने को।
मय काफ़ी है जाम बहुत है।।

कतअ तअल्लुक़ तुमने किया है।।
हमको भी आराम बहुत है।

वहशते दिल चल और कहीं चल।।
वीराना तो आम बहुत है।

गर्दिशे दौरां से बचने को।
एक शिकस्ता जाम बहुत है।।

शहला वो मालूम नहीं है।
उन पर भी इलजाम बहुत है।।

शकीला 'बानू' भोपाली

अलम कुछ और कहता है खुशी कुछ और कहती है।
मेरी हालत पे दुनियाँ की हँसी कुछ और कहती है ॥

निगाहें नाज़ की शोखी और तौबा मआज़ अल्ला।
कभी कुछ और कहती है, कभी कुछ और कहती है ॥

ग़मे दौरों से घबरा कर जो मरने की दुआ मांगी।
बड़ी मासूमियत से ज़िन्दगी कुछ और कहती है ॥

बज़ाहिर ज़िन्दगी में इक अंधेरा ही अंधेरा है।
मगर दिल से उमीदे रौशनी कुछ और कहती है ॥

ये माना सिलसिला बहशत का है जेबोगिरेबाँ तक।
मगर मुझसे मेरी दीवानगी कुछ और कहती है ॥

खयाले यार से बेगानगी आसां नहीं "बानूँ"।
दिले मजबूर की बेगानगी कुछ और कहती है ॥
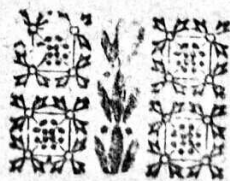
राम कृष्ण 'मुज़तर'

मेरी निगाह में ये रंगे साज़ो साज़ न हो ।
तेरे करम का अगर सिलसिला दराज़ न हो ॥

बमीद चश्मे तग़ाफुल शे आर से कब थी ।
इस इतति फ़ाते फरावाँ में कोई राज़ न हो ॥

हमारे हाले परेशाँ पे इक नजर भी नहीं ।
नियाज़ मन्द से इतना तो बे नियाज़ न हो ॥

किसी ने तोड़ दिए बरबते हयात के तार ।
अब और क्या हो अगर आह जाँ गुदाज़ न हो ॥

शबे फिराक़ न काटे कटी कभी "मुज़तर" ।
किसी की याद अगर दिल में ग़म नवाज़ न हो ॥

'कुमारी निकहत' ख़ान

मैं तुम्हें दिल से प्यार करती हूं।
इसलिये दिल से प्यार करती हूं।।

जानती हूं कि बेवफा तुम हो।
फिर भी मैं ऐतबार करती हूं।।

ग़मे जानां है ज़िन्दगी दिल की।
ग़मे जानां से प्यार करती हूं।।

दिल मगर बेकरार रहता है।
सईये[1] तस्कीं हज़ार करती हूं।।

वादा और वो भी आपका वादा।
फिर भी मैं ऐतबार करती हूं।।

कोई तो ग़म[2] गुसार है 'निकहत'
शुक्रे परवर[3] दिगार करती हूं।।
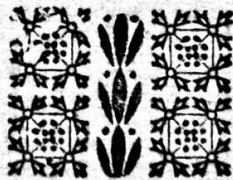
१. संतोष का प्रयत्न २. मित्र, साथी ३. ईश्वर।

ख़ान 'अरमान' इलाहाबादी

तू क्या जाने ऐ सुन्दरता के सम्राट ।
घायल जोगी कब से तके है तेरी बाट ॥

राधा रस्ता भूली मुरली टूट चुकी ।
कितने युगों से सूना है यमुना का घाट ॥

अस की मैली चादर ओढ़ी जीवन भर ।
रोज़ बिछाई आंगन में बिपता की खाट ॥

सोई सोई बस्ती खोये-खोये लोग ।
उजड़े-उजड़े मेले, सूनी-सूनी हाट ॥

अंखियाँ जाने किसके सपने देखा करती हैं ।
किसके कारन जब देखो तब जी है उचाट ॥

'मीना' सिद्दीकी

सुनती हूं कि तुम महरमे[1] तकदीरे वफ़ा हो ।
मुझको भी बता दो जो मुकद्दर में लिखा हो ॥

निगहत हो कहीं गुल की कहीं बादे सबा हो ।
कलियों का तबस्सुम हो कहीं मेरी अदा हो ॥

मुजरिम हूं कभी शिकवा जो तुमसे किया हो ।
महबूब मेरे किस लिए तुम मुझ से खफ़ा हो ॥

ये भी मुझे मालूम है जाते हो जहाँ तुम ।
ये भी मुझे मालूम है तुम जिस पर फ़िदा हो ॥

मैंने तो तुम्हें दे दिया दिल अच्छा समझ कर ।
आगे मेरी तक़दीर भला हो कि बुरा हो ॥

"मीना" मुझे कुछ ख़ौफ़ नहीं आज किसी से ।
वो मौजे हवादस[2] हो कि तूफ़ाने बला[3] हो ॥

---

१. भाग्य के रहस्य से परिचित २. घटनाओं और विपत्तियों की बाढ़
३. विपदा का तूफान ।

श्रीमती मुज़फ़्फ़रुन्निसा 'नाज़'

मुझसे खफ़ा हैं बन्द भी अब बोल चाल है।
शायद मेरी हयात अधूरा सवाल है॥

जिसको दिलों के फ़ासले भी हल न कर सके।
अब तक मेरी निगाह में वही इक सवाल है॥

चुप है अगर ज़ुबान तो आँखें सुनायेंगी।
जो उनका हाल है वही मेरा भी हाल है॥

किस मोड़ पे हयात के छोड़ा है तुमने साथ।
महसूस हो रहा है कि जीना मुहाल है॥

भटके हुओं को मिलती है पत्थर में रोशनी।
है "नाज़" सिर्फ हुस्ने नज़र का सवाल है॥
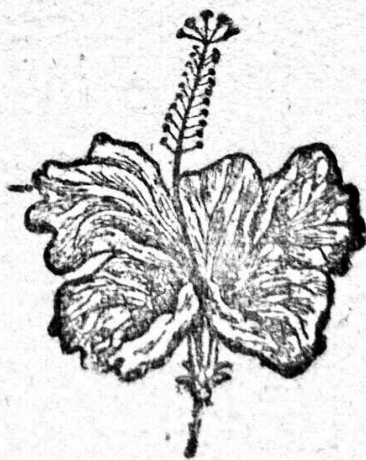
'महमूद' नशतरी

दूर तक हम गए चाँदनी रात में।
ग़म के साये तले चांदनी रात में।।

गुल नये ये खिले चाँदनी रात में।
ख़ार लौदे उठे चाँदनी रात में।।

दिल को देते हैं तस्कीन की रौशनी।
हसरतों के दिये चाँदनी रात में।।

जाने क्यों जा रहा आपकी याद में।
अशक मोती बने चाँदनी रात में।।

दाग हाये जिगर ज़ूफ़शाँ[1] हो गये।
जब वो मुझसे मिले चाँदनी रात में।।

हमने "महमूद" उनसे ब अज़्मे वफ़ा।
अहदो[2] पैसाँ किये चाँनदी रात में।।

१. प्रकाशमान २. वायदे।

चुपके-चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है।
हम तो अब तक आशिक़ी का वो फ़साना याद है।।
—'हसरत मोहानी'

मेरे आँसू न पोंछना हर गिज।
कहीं दामन तर न हो जाये।। —'मोमिन'

अब दिल के फ़साने को बयाँ करतें हैं आँसू।
अब हमसे तेरे ग़म की हिफ़ाज़त नहीं होती।। —'कैस' रामपुरी

मुझको मेरी वफा का सिला और क्या मिले।
उसने भी मेरी याद में आँसू बहाये हैं।। —'नामालूम'

निगाहें

बदल गईं वो निगाहें ये हादसा था अखीर।
फिर उसके बाद कोई इन्कलाब आ न सका।।
—'सीमान' अकरावादी

साथ उनके मेरी निगाह गई।
जब निगाह थक गई तो आइ गई।। —'दाग'

निगाहों से चलते हैं सब काम उसके।
बहुत सख्त जिनकी निगाह बनियां है।। —'नामालूम'

निगाहें जावे शक्ले यार तक क्या चीज ले आईं।
जिसे दर्दे मुहब्बत कहके मैंने पाल राखा है।।— 'खयाल'

महफ़िल

मेरी महफ़िल से उठता ग़ैर उसकी क्या मज़ाल।
देखता था मैं कि तूने भी इशारा कर दिया।।—'हसरत' मोहानी

हमीं उठ गये जब तो क्या रंगे महफ़िल।
किसे देखकर आप शरमाईयेगा।। —'जिगर' मुरादाबादी

गरचे है किस किस बुराई से वले बाईं हमा।
ज़िक्र मेरा मुझसे बेहतर है कि उस महफ़िल में है ।।

—'गालिब'

रक़ीबों का तेरी महफ़िल में तेरी क्या काम ।
जहन्नुम इन से भर जाये तो अच्छा ।। —'दाग'

न वो मुनकिर खुदा के हैं न जन्नत के न दोज़ख के ।
ये क्या कुछ देख आये तेरी महफ़िल देखने वाले ।।—'नामालूम'

दास्तान

नहीं कहता तो उनकी बद गुमानी और बढ़ती है।
जो कहता हूँ तो लुत्फ़े दास्तां बाकी नहीं रहता ।।

—'मख़मूर' देहलवी

दास्ताने ग़म कहें तो क्या कहें ?
जानते हैं कहके पछतायेंगे हम ।। —'साहिर' होशियार पुरी

बस इतनी सी थी दास्ताने हयात ।
तेरे दर पे आये सदा कर चले ।। —'रविश' सिद्दीकी

मुस्तक कर रहा हूं आंसुओं को और आहों को ।
कि मेरी ज़िन्दगी की दास्तां तैयार हो जाये ।।

—भगवानदास 'शोला'

मैं इश्क हूं मुकम्मल, मैं शौक़ हूं मुसल सल ।
गोया तमाम आलम मेरी ही दास्तां है ।।

नाम

जस्न भी आता है मेरा नाम तेरे नाम के साथ ।
जाने क्यों लोग मेरे नाम से जल जाते हैं ।। —'क़तील'

सुन के तेरा नाम आँखें खोल देता था कोई ।
अब तेरा ही नाम लेकर कोई ग़ाफ़िल हो गया ।। —'फ़ानी'